शिक्षा का अर्थ :-

अरस्तू के अनुसार- एक स्वस्थ शरीर के स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है

रूसो के अनुसार- शिक्षा एक आदत है

जॉन डी वी के अनुसार - "शिक्षा उन सभी शक्तियों के विकास को कहते हैं जो व्यक्ति को इस योग्य बनाती है कि वह वातावरण को नियंत्रित कर सके"

मानव जीवन में शिक्षा के कार्य (General function of education in Human life)

मानव जीवन में शिक्षा के निम्नलिखित कार्य हैं-

1. जन्मजात शक्तियों का विकास

मनुष्य कुछ जन्मजात शक्तियों को लेकर पैदा होता है। बच्चा प्रेम, स्नेह, उत्सुकता, तर्क कल्पना तथा आत्म गौरव नामक प्रवृत्तियों को लेकर पैदा होता है। वास्तविक शिक्षा वही है जो मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास करे।

2. सन्तुलित व्यक्तित्व का विकास

शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य व्यक्तित्व का सन्तुलित तथा सर्वांगीण विकास करना है। व्यक्ति के व्यवहारों के सम्पूर्ण गुणों का नाम ही व्यक्तित्व है। सर्वांगीण विकास का अर्थ है सम्पूर्ण पहलुओं का विकास।

3. चरित्र निर्माण तथा नैतिक विकास -

शिक्षा का कार्य बालक के चरित्र का निर्माण तथा उसका नैतिक विकास करना है। मनुष्य के चरित्र का निर्माण उसकी मूल प्रवृत्तियों के आधार पर होता है। ये मूल प्रवृत्तियां जन्म से न अच्छी होती हैं न बुरी, इनकी अच्छाई और बुराई इनके परिशोधन पर आश्रित है। शिक्षा का कार्य यह है कि वह व्यक्ति में आदर्श चरित्र का निर्माण करे। उत्तम चरित्र से ही नैतिकता का विकास होता है।

4. आत्मनिर्भर बनाना -

जो व्यक्ति किसी की सहायता बिना अपना कार्य स्वयं कर लेता है उसे आत्मनिर्भर कहते हैं जो व्यक्ति आत्मनिर्भर होता है उसी का जीवन सुखी होता है।

ऐसा व्यक्ति किसी के लिए भार स्वरूप नहीं होता है। अतः शिक्षा का यह कार्य होना चाहिए कि व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाने में सहायता करे। विद्यार्थी जीवन के दौरान अपने माता-पिता पर आश्रित रहता है और शिक्षा पूरी करने के बाद नौकरी प्राप्त करने के लिए दूसरों पर आश्रित रहता है यदि उसे नौकरी न मिली तो वह कोई भी काम नहीं कर सकता।

5. वातावरण अनुकूलन - प्रत्येक प्राणी को जीवित रहने के लिए वातावरण से संघर्ष करना पड़ता है उसे सदैव गर्मी, सर्दी आदि का मुकाबला करना पड़ता है। जो प्राणी अपने वातावरण को अनुकूल बना लेता है वही जीवित रह पाता है अन्यथा नष्ट हो जाता है। इस प्रकार शिक्षा का यह कार्य है कि वह वातावरण से अनुकूलन कर सके।

6. व्यावहारिक ज्ञान - शिक्षा का कार्य है कि वह बालक को जीवन के विभिन्न कार्य क्षेत्रों का व्यावहारिक ज्ञान दे। व्यावहारिक ज्ञान के अभाव में व्यक्ति जीवन की दौड़ में पीछे रह जाता है। केवल पुस्तकीय ज्ञान से जीवन की जटिल समस्याओं को नहीं सुलझाया जा सकता।

7. **मार्गदर्शन** - शिक्षा का यह कार्य है कि वह व्यक्ति का मार्गदर्शन करे। जिस प्रकार जीवन में सांसारिक बातों से परिचय प्राप्त करने के लिए अनुभव की आवश्यकता है उसी प्रकार प्रगति के पथ पर आगे बढ़ने के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। यदि कोई व्यक्ति प्रयत्न और भूल के सिद्धान्त पर प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहे तो समय और शक्ति का अपव्यय होगा। इसके विपरीत मार्गदर्शन से प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ना सुगम हो जाता है। मार्गदर्शन के बल पर आदमी विभिन्न परिस्थितियों में सामंजस्य स्थापित कर लेता है अतः शिक्षा का महत्वपूर्ण कार्य है व्यक्ति का मार्गदर्शन करना।

शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

शिक्षा के सामान्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:—

1. **ज्ञानार्जन का उद्देश्य** - भारतीय दर्शन तथा ग्रीक विद्वानों के अनुसार शिक्षा का एक मात्र उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति है। भारतीय दर्शन में ब्रह्मज्ञान तथा केवल्य ज्ञान को सच्चा ज्ञान

माना गया है। ब्रह्म, आत्मा तथा ईश्वर के सम्बन्ध में जो सच्चा और यथार्थ ज्ञान रखता है उसे ज्ञानी कहा गया है।

2. शारीरिक विकास का उद्देश्य -

शारीरिक विकास का उद्देश्य का अर्थ है कि बालक को इस प्रकार की शिक्षा दी जाये जिनसे उसका शरीर स्वस्थ, सुन्दर तथा सुदृढ बने, सभी युगों तथा देशों में इस शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य माना गया है। शरीर की साधना करना मनुष्य का पहला धर्म है। धर्म की साधना के लिए शरीर की आवश्यकता है।

3. चरित्र विकास का उद्देश्य - कुछ

शिक्षाशास्त्री ज्ञान तथा शारीरिक विकास के उद्देश्य पर अधिक बल देते हैं तो कुछ शिक्षाशास्त्री चरित्र का विकास शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मानते हैं। आज हमारे भारतीय समाज मे चारित्रिक तथा नैतिक पतन की प्रवृत्ति बढ रही है जिसे समाज में भ्रष्टाचार, अनाचार और अराजकता बढ रही है। चरित्र निर्माण ही शिक्षा का मूल आधार है और चरित्र नैतिकता अनिवार्य है संसार में चरित्रवान व्यक्ति को ही सम्मान मिलता है